तत् त्वं पूषन् अपावृणु

PM SHRI

Pradhan Mantri ScHools for Rising India

Creating holistic and well-rounded individuals equipped with key 21st Century skills

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय महासमुंद

बाल संपदा

2025-26

ई-पत्रिका

केंद्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर

दीनदयाल उपाध्याय नगर, सेक्टर-4,रायपुर (छत्तीसगढ़),पिन-492010

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

पी.बी.एस. उषा
उपायुक्त

P.B.S. USHA
Deputy Commissioner

//संदेश//

अत्यंत हर्ष का विषय है कि केंद्रीय विद्यालय महासमुंद इस सत्र 2025-26 में विद्यालय का पत्रिका (बाल संपदा) प्रकाशन करने जा रहा है।

विद्यालय पत्रिका एक विद्यालय में संपादित समस्त शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक गतिविधियों का विहंगम दृश्य प्रस्तुत करता है। यह एक माध्यम है जिसके द्वारा विद्यालय के समस्त विद्यार्थी अपने सृजानात्मकता, कल्पनाशीलता और विचारों का प्रदर्शन करते है।

केंद्रीय विद्यालय महासमुंद के शिक्षक एवं विद्यार्थियों ने विद्यालय पत्रिका के संपादन और प्रकाशन के लिए जिस समर्पण एवं तत्परता से कार्य किये हैं उसके लिए साधूवाद के पात्र हैं। इस प्रयोजन की सफलता के लिए मै हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

पी.बी.एस. उषा
उपायुक्त
रायपुर संभाग

प्रति,
श्री संजय कंसल
प्राचार्य
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय महासमुंद (छ.ग.)

केंद्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर

दीनदयाल उपाध्याय नगर, सेक्टर-4,रायपुर (छत्तीसगढ़),पिन-492010

श्री विवेक कुमार चौहान
सहायक आयुक्त
SHRI VIVEK KUMAR CHAUHAN
Assistant Commissioer

//संदेश//

अत्यंत हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय महासमुंद द्वारा विद्यार्थियों और शिक्षकों की साहित्यिक प्रतिभा को मुखरित करते हुए विद्यालय पत्रिका (बाल संपदा) 2025-26 का प्रकाशन किया जा रहा है। नवनिहाल बच्चों की लेखनी से निकली नवीन रचनाए अपने-अपने शब्द रंगों से आलोकित होकर विद्यालय के गुलशन को और अधिक महकाती है विभिन्न विचारों की अभिव्यक्ति को एक साथ एक मंच देने का विद्यालय पत्रिका एक सशक्त माध्यम है।

पत्रिका के माध्यम से विद्यालय में वर्ष भर आयोजित गतिविधियों की झांकी प्रस्तुत करने का भी अवसर मिलता है। विगत वर्षों में केन्द्रीय विद्यालय महासमुंद की सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय भागीदारी रही है।

सभी रचनाकारों और सहयोगी शिक्षकों को इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

आपका शुभेच्छु
श्री विवेक कुमार चौहान
सहायक आयुक्त
रायपुर संभाग

प्रति,
श्री संजय कंसल
प्राचार्य
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय महासमुंद (छ.ग.)

श्री विनय कुमार लंगेह
भा.प्र.से.
कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी
जिला महासमुंद (छ.ग)

//संदेश//

मुझे यह जानकर प्रसंन्नता हो रही है कि केंद्रीय विद्यालय महासमुंद वर्ष 2025-26 के लिए अपनी विद्यालय पत्रिका (बाल संपदा) प्रकाशित करने जा रही है।

विद्यालय पत्रिका विद्यार्थियो को कविता चित्रकला कहानी आदि के माध्यम से अपनी रचनात्मक प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए मंच प्रदान करती है और इस प्रक्रिया में उसके संचार कौशल को निखारती है।

मै शैक्षणिक वर्ष 2024-25 के दौरान उत्कृष्ट परिणाम के लिए छात्रों, शिक्षण स्टाफ और प्राचार्य को बधाई देना चाहता हूँ। मै विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए उनके ईमानदारी और पूरे दिल से किए गए प्रयासों की भी सराहना करता हूँ ताकि वह हमारे देश के योग्य नागरिक बन सके।

मै इस पत्रिका को प्रकाशित करने में उनके सराहनीय प्रयासों के लिए प्राचार्य, स्टाफ और संपादकीय बोर्ड को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

विनय कुमार लंगेह
कलेक्टर एवं अध्यक्ष
वीएमसी

प्रति,
श्री संजय कंसल
प्राचार्य
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय महासमुंद (छ.ग.)

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय महासमुंद (छ.ग.)

बी टी आई रोड, वन विभाग प्रशिक्षण केंद्र के पास, रमन टोला, महासमुंद जिला-महासमुंद (छत्तीसगढ) पिन 493445

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

श्री संजय कंसल
प्राचार्य

SHRI SANJAY KANSAL
PRINCIPAL

//संदेश//

यह अत्यंत हर्ष, गर्व और सौभाग्य का विषय है कि केंद्रीय विद्यालय महासमुंद सत्र 2025–26 के लिए अपनी ई-विद्यालय पत्रिका (बाल संपदा)का प्रकाशन कर रहे है। वास्तव में, यह विद्यालय पत्रिका विद्यार्थियों और शिक्षकों के संयुक्त प्रयासों, रचनात्मकता तथा प्रतिभा का सुंदर परिणाम है।

मुझे आशा है कि शिक्षकों के कुशल मार्गदर्शन तथा विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनशीलता, कल्पनाशीलता और मौलिकता को इस पत्रिका में उचित स्थान मिला होगा।

मैं संपादक मंडल के सदस्यों, शिक्षकों तथा इस प्रयास में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी लोगों को अपनी शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ।

श्री संजय कंसल
प्राचार्य
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय महासमुंद (छ.ग.)

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय महासमुंद (छ.ग.)

बी टी आई रोड, वन विभाग प्रशिक्षण केंद्र के पास, रमन टोला, महासमुंद जिला-महासमुंद (छत्तीसगढ) पिन 493445

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

//संदेश//

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय महासमुंद द्वारा इस वर्ष भी ई-पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इसके लिए विद्यालय के प्राचार्य महोदय, समस्त शिक्षक-शिक्षिकाओं, पालकों एवं विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

आज केंद्रीय विद्यालय महासमुंद विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में पूर्णतः तत्पर है। हम विद्यार्थियों के शैक्षिक, शारीरिक एवं मानसिक विकास को लेकर संकल्पित हैं। यह पत्रिका इन भावों के साथ-साथ विद्यालय की विभिन्न उपलब्धियों को भी प्रदर्शित करेगी। विद्यार्थियों की विविध कलाओं, योग्यताओं एवं क्षमताओं को इसमें उचित स्थान मिला है। इससे विद्यार्थियों के भीतर नई ऊर्जा का संचार होगा और वे और भी बेहतर करने के लिए प्रेरित होंगे।

यह पत्रिका हमारी सृजनात्मकता, कर्मठता एवं लगनशीलता के भाव को प्रोत्साहित करेगी।

शुभकामनाओं के साथ…

श्रीमती कांता एक्का
प्रधानाध्यापिका
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय महासमुंद (छ.ग.)

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय महासमुंद (छ.ग.)

बी टी आई रोड, वन विभाग प्रशिक्षण केंद्र के पास, रमन टोला, महासमुंद जिला-महासमुंद (छत्तीसगढ) पिन 493445

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

//संपादकीय//

विद्यालय पत्रिका विद्यार्थीयों की साहित्यिक सृजनात्मकता, वैचारिक चिंतन एवं लेखन प्रतिभा को प्रतिबिंबित करने का सशक्त माध्यम है। इसमे विद्यालय की वर्षभर की विभिन्न शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक उपलब्धियों एवं गतिविधियों की झलक मिलती है। विद्यार्थी अपने मौलिक विचार कविता, लेख, चित्रकला आदि के माध्यम से व्यक्त करते है।

पत्रिका प्रकाशन के लिए ऊर्जावान एवं दूरदर्शी प्राचार्य श्री संजय कंसल के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जो समय-समय पर कुशल मार्गदर्शन देते रहे है। उनकी प्रेरणा और अथक प्रयास के परिणामस्वरूप ही यह पत्रिका प्रकाशित हो सकी है।

प्रेरणास्पद संदेश प्रेषित करने के लिए कलेक्टर महोदय और संगठन के सभी अधिकारियों के प्रति हृदय से आभार..........

अंत में सभी विद्यार्थियों, कंप्युटर विभाग, अध्यापकगण एवं संपादक मण्डल के सदस्य धन्यवाद के पात्र है जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से पत्रिका के प्रकाशन में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किए।

विद्यालय पत्रिका सुधी पाठकों के समक्ष इस आशा से प्रस्तुत कर रहे है कि-

संत हँस गुण गहहि पय, परिहरी बारि बिकार।

दशरथ राम यादव
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय महासमुंद (छ.ग.)

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय महासमुंद (छ.ग.)

बी टी आई रोड, वन विभाग प्रशिक्षण केंद्र के पास, रमन टोला, महासमुंद जिला-महासमुंद (छत्तीसगढ) पिन 493445

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

EDITORIAL BOARD SPEAKS…..

We are delighted to bring out this edition of Vidyalaya Patrika. As we know that the seeds of talents are buried in every human being, but sometimes in dormant state. This Patrika is a small effort to boost up the creativity and artistry of the bubbling young kids who have tried to express their inner thoughts and feelings which are very much of eager to be sprouted to enthral you.

The creative writings of the budding artists will encourage their fellow beings to try their hands in the art of creative writing. Undoubtedly they may not be at par with excellence but no one can deny the struggling efforts of the future Marktwain and Bacon.

Editorial Board is sure that these young buds will bloom as flowers with sweet fragrance.

We thank profusely our Principal ,Shri Sanjay Kansal for his wholehearted support and constant motivation in bringing out this magazine. We highly appreciate the teachers and students of this Vidyalaya who have contributed to make this endeavour a great success.

Wishing you a joyful and pleasurable reading…..

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय महासमुंद (छ.ग.)

बी टी आई रोड, वन विभाग प्रशिक्षण केंद्र के पास, रमन टोला, महासमुंद जिला-महासमुंद (छत्तीसगढ) पिन 493445

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

श्री दशरथ राम यादव (प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक हिंदी)
श्री सुरेश कुमार सिंह (स्नातकोत्तर शिक्षक अंग्रेजी)
श्रीमती भूनेश्वरी यादव (प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका संस्कृत)
श्री ओमप्रकाश चंद्राकर (प्राथमिक शिक्षक)
श्रीमती सोनिया (प्राथमिक शिक्षिका)

तकनीकी रचनात्मक और संपादकीय

श्री लोकेश सिंह
स्नातकोत्तर शिक्षक
संगणक विज्ञान

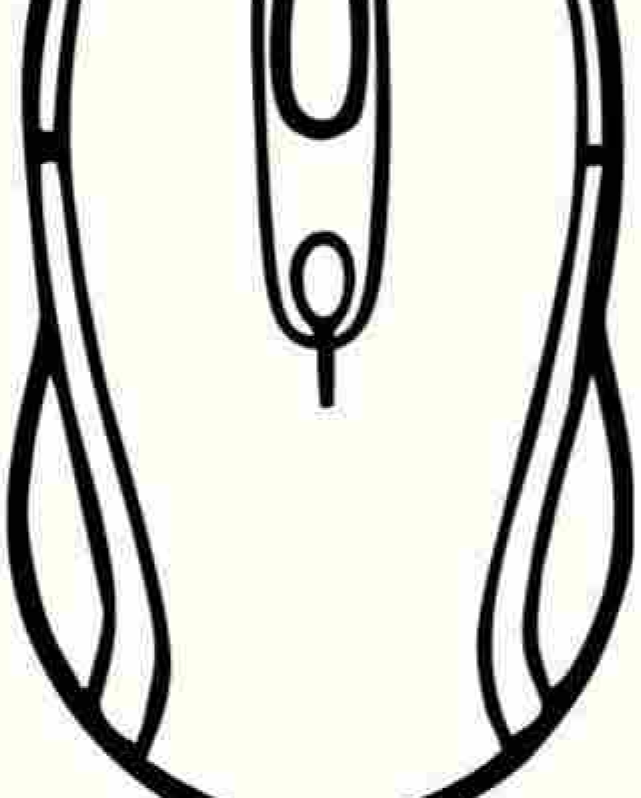

श्री राजेश कुमार
संगणक अनुदेशक

हिंदी विभाग

Hindi Department

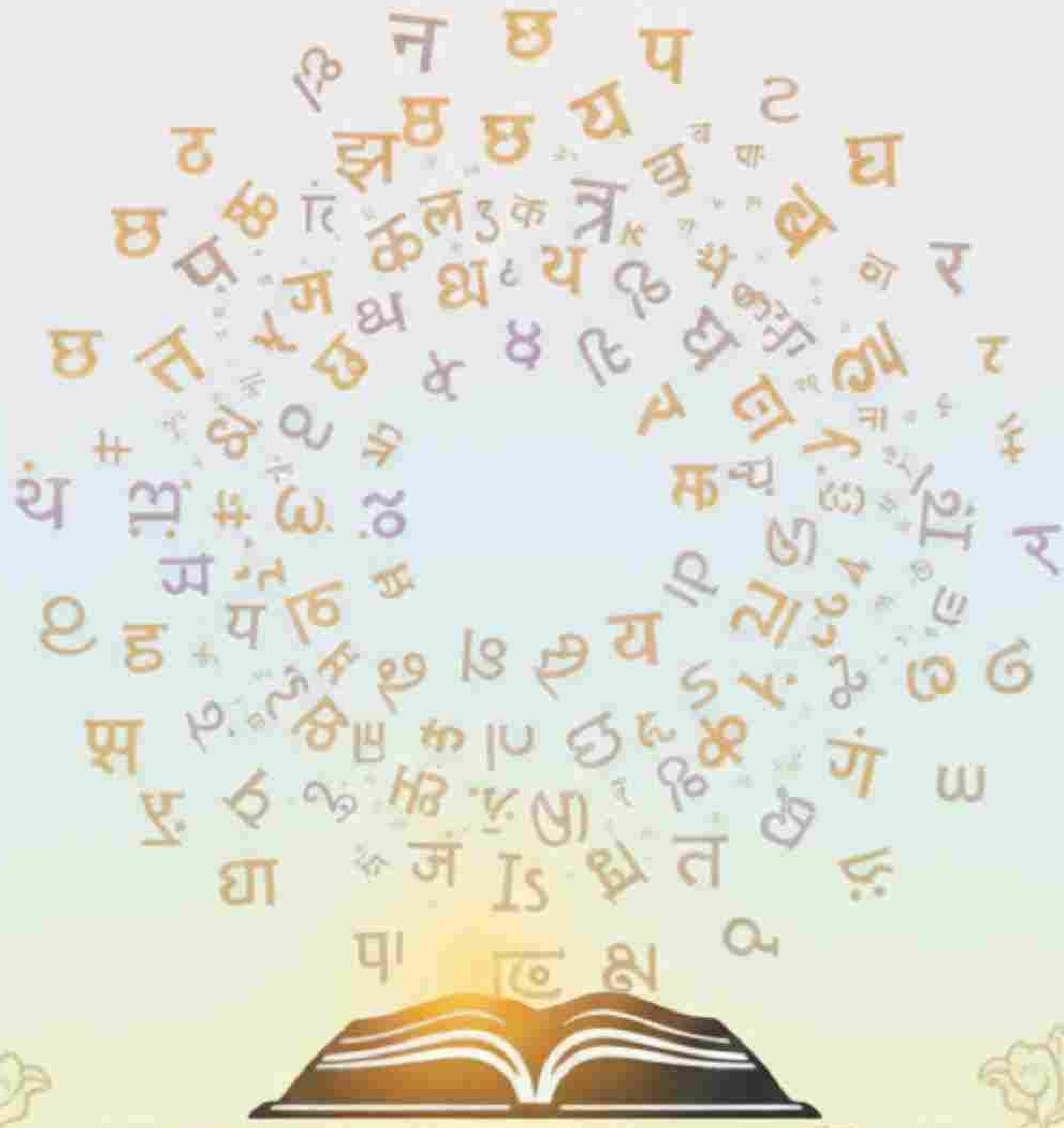

सावन के गीत

रिमझिम -रिमझिम सावन आए ,
काले -काले बादल लाए ,
वृक्षों और वनस्पतियों को फिर से जीवन की नई उम्मीद दिलाए ।
नदियां - नाले भर -भर जाएं,
घर के भीतर बौछारें आए ,
टिप- टिप की आवाज में हम नाचे और झूम के गाए ।
तपती गर्मी को धूल चटाए ,
सूखी धरती की प्यास बुझाए, बारिश के सुहाने मौसम में हम छतरी का आनन्द उठाएं ।
चावल की खेती लहराए,
कृषकों के चेहरे खिल जाएं ,
धरती मां जब पानी को खींचे,
चारों ओर मिट्टी की खुशबू आए ।
बच्चे कागज की नाव बनाएं,
मम्मी चाय पकौड़ों की थाल सजाएं,
बागों में डल गए झूले देखो, चलो ! सब सावन के गीत गुनगुनाए ॥

सुयशी जौहरी
कक्षा 11वीं – अ

केंद्रीय विद्यालय महासमुंद

केंद्रीय विद्यालय महासमुंद की
शान,
ज्ञान का मंदिर, शिक्षा का स्थान।
गुरु की कृपा, विद्यार्थियों का ध्यान,
अनुशासन और शिक्षा का उत्तम
स्थान।
महासमुंद की धरा पर ज्ञान का
प्रकाश,
केंद्रीय विद्यालय, शिक्षा का सुंदर
स्थान

पूर्वांश साहू
कक्षा 5 वी

कमज़ोर नहीं,

मैं ख़ामोश सही, पर कमज़ोर नहीं,
हर ज़ख्म मेरा, अब शोर नहीं
दिल में मोहब्बत, आँखों में सपना,
मंज़िल मेरी, कोई अपना
लोग रोकें तो भी मैं चलती रहूँ,
आंधियों में भी मैं जलती रहूँ
मेरे पंख थकें, तो क्या हुआ,
इरादों से ही तो आसमां छुआ
मैं नर्मी भी हूँ, मैं आग भी हूँ
मैं सुकून भी, मैं जाग भी हूँ
मुझमें दर्द है, पर डर नहीं,
मैं उड़ान हूँ और मैं ठहरा नहीं |

जान्हवी लोनारे
कक्षा 12 अ

छत्तीसगढ़ी कविता

जम्मो लइका दस पईसा के स्याही भरावन
पॉच पईसा म पेन्सिल ।
खम्भा-खम्भा घिंस- घिंस के
कर देन ओला चोक्खी ।।

.बोरी के बस्ता सिलवावन
बोरी ल छत्ता बनावन ।
बईठे बर बोरी ले जावन
बेंच कहॉ ले पावन।।

गुरूजी जब पिटय चेथी
विद्या झम-झम आवै ।
दाई-ददा के चलै कुटाई
टिवसन कहां पढावै ।।

स्कूल जाय बर बासी खावन
डेढ बज्जी भात खावन।
चाऊमीन पिज़्ज़ा कहां ले पातेन
रोटी लगे सुहावन ।।

बेरा बर ओरिया छॉव देखन
छुट्टी बर देखन खईखा ।
टीवी मोबाईल कहॉ जी संगी
खेलन लईके लईका ।।

का नरवा का खेत-खार
का ठंडा का तात ।
मजे-मजा म रहे जमो झन
अब तईहा होगे बात ।।

रचित देवांगन
कक्षा पहली अ

मां पर कविता 🌹🌹

मेरी मां है कितनी प्यारी,
सबसे सुंदर सबसे न्यारी।

मीठी – मीठी लोरी गाती,
लोरी गाकर मुझे सुलाती।

मुझे पढ़ाती, मुझे लिखाती,
पहले खाना मुझे खिलाती।

सच बोलना मुझे सिखाती,
सच्ची राह मुझे दिखाती।

भाविषा चंद्राकर
कक्षा –तीसरी (अ)

चलो आगे बढ़ते है

घर की चार दिवारी से निकले नए भविष्य में चलते है
हम नन्हे बालक से अब , चलो आगे बढ़ते है

संसार की नियमों को जाने और नीतियों को गढ़ते है
हम नन्हे बालक से अब , चलो आगे बढ़ते है

हो विकास हमारे तन मन का
और विकास हो जन जन का

चलो विकास की सीढ़ी में हम भी ऊपर चढ़ते है
हम नन्हे बालक से अब चलो आगे बढ़ते है

माता- पिता भाई और बहना
उनके साथ है कैसे है रहना

रहन सहन के तौर तरीके और संस्कार को पढ़ते हैं
हम नन्हे बालक से अब चलो आगे बढ़ते है

छोटे छोटे पाव हमारे, चलते हैं हम धीरे धीरे
और शिक्षक है साथ हमारे
ध्यान रखते है कि हम न गिरे

शिक्षा की शिखर पर हम अविरल आगे चढ़ते है
हम नन्हे बालक से अब चलो आगे बढ़ते है

हम बढ़ेंगे देश बढ़ेगा
शिक्षा और सम्मान बढ़ेगा

चलो काली अशिक्षा से हम लड़ाई लड़ते है
हम नन्हे बालक से अब चलो आगे बढ़ते है

प्रनील सेठी
क्लास 4 अ

किताबों की दुनिया

ये किताबें हमारी जान है,
ये किताबें हमारी शान है।

ये किताबें ही हैं जो हमें सहारा देती है,
ये किताबें ही हैं जो डूबते को किनारा देती है।

जीवन के किसी डगर में,
अगर तुम अकेले होते हो!

निकाल लेना चौपाई रामायण की,
पढ़ना जरूर दोहा श्री रघुराई की।

हर दर्द से छुटकारा मिलता है किताबों में,
भटके हुए को सहारा मिलता है इन किताबों में।

किताबें हमें इतिहास बताती है,
आने वाले कल का आभास कराती है।

ये किताबें हमारी जान है,
ये किताबें हमारी शान है।

जय हिंद

पीयूष साहू
2 री ब

मोबाइल "

मेरा नाम है मोबाइल
रखता हू सबकी प्रोफाइल,

मै हू संचार की पहचान
मुझे यूज करता हर इंसान,
मोबाइल का आना,

आँखों का कमजोर होना
नींदो का गायब होना ,

मेरा जन्मदाता है विज्ञान
बढ़ाता हूँ मै सब का ज्ञान,

मैमोरी मेरी सबसे तेज
बढ़ रहा है मेरा क्रेज,

मेरा नाम है मोबाइल
रखता हू सबकी प्रोफाइल।

ओजस रात्रे
कक्षा दूसरी -ब

मुझको मेरा हक दो

मुझको मेरा हक दो पापा,
बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी !
लेने दो खुली हवा में सांसे,
बेटे से ज्यादा फर्ज निभाऊंगी !!
मुझको मेरा हक दो पापा,बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी !!

उड़ने दो किसी पतंग के जैसी,
आसमान को छुकर आउंगी !!
क्यों डरते हो हैवानी दुनिया से
अकेली सब पर भारी पड़ जाउंगी !!
मुझको मेरा हक दो पापा,बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी !!
माना डगर कठिन बहुत है,
मंजिल तक फिर भी जाउंगी !
मुझ पर करो भरोसा तुम,
कभी न दुःख पहुँचाऊँगी !!
मुझको मेरा हक दो पापा,बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी !!
करो हौसले मेरे बुलंद तुम,
अधूरे सपने पूरे कर दिखलाऊँगी !
मत आंको कम मेरी ताकत,
संतान का हर फर्ज निभाऊंगी !!
मुझको मेरा हक दो पापा,बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी !!

अलंकृता गोस्वामी
कक्षा - तीसरी -ब

समझा देना मात मेरी को,
जिसने नारी का हर दुःख झेला है!
रखे हौसला अब दिन दूर नही,
जब तुम दोनों का सम्मान बढ़ाउंगी !!
मुझको मेरा हक दो पापा,बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी !!
आएगा कभी वक़्त बुरा भी,
हर सुख दुःख में साथ निभाऊंगी !
नहीं बनूँगी कमजोर कड़ी मैं,
अपने घर की ताकत बन जाउंगी !!
मुझको मेरा हक दो पापा,बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी !!
शान हूँ अपने बाबुल की,
कभी न नीचा दिखलाऊँगी !
खेले अगर कोई मेरी आन से,
रूप दुर्गा चंडी का भर जाउंगी !
मुझको मेरा हक दो पापा,बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी !!
मुझको मेरा हक दो पापा,
बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी!
लेने दो खुली हवा में सांसे,
बेटे से ज्यादा फर्ज निभाऊंगी !!
मुझको मेरा हक दो पापा,बहुत कुछ कर दिखलाऊँगी !!

अलंकृता गोस्वामी
कक्षा - तीसरी -ब

सिपाही

अपने देश का सिपाही बनूँगा मैं
वीरता की अमर कहानी बनूँगा मैं।
मैं भी उन लोगों के जैसे गोलियां चलाऊंगा,
दुश्मनों को अपने देश से दूर मार भगाऊँगा।
ठंडी,गर्मी,बारिश,पतझड़ चाहे कोई भी मौसम होगा,
साँसे भी रूक जाए पर देशभक्ति नहीं कम होगा।
कभी नहीं वो मिटने वाली निशानी बनूँगा मैं,
वीरता की अमर कहानी बनूँगा मैं।
हर जरूरतमंद का साथ दे चलूँगा,
सबके हाथ में अपना दे हाथ, दे चलूँगा।
चाहे कुछ भी हो जाए, हर मुश्किल से लड़ जाऊंगा,
चाहे क्यूँ न लड़ते लड़ते, टुकड़ों में कट जाऊंगा।
किसी नदी में बहने वाला पानी बनूँगा मैं,
वीरता की अमर कहानी बनूँगा मैं।
पर शायद इस जंग के बाद,जिंदा मैं न आ पाऊँ,
जिस मिट्टी में जन्म लिया हैं,उसी मिट्टी में मिल जाऊ।
या तो भारत के झंडे को लहराता हुआ आऊँगा,
या फिर मैं भी इस झंडे में कहीं लिपट रह जाऊंगा।
सबके दिल में बसने वाली कुर्बानी बनूँगा मै,
वीरता की अमर कहानी बनूँगा मैं।

देवांक शर्मा
9 वी -अ

मूर्ख कौआ

पहाड़ की चोटी पर एक बाज पक्षी रहता था। वहीं पेड़ पर एक कौआ रहता था ।वह बहूत चालाक था ।करना कुछ ना पड़े, खाना मिल जाए, इसी ताक में रहता । पेड़ की जड़ में खरगोश रहते थे। खरगोश बाहर आते तो बाज झपट्टा मारकर उसे उठा ले जाता। कौए ने सोचा मैं भी झपट्टा मारकर खरगोश को पकड़ लूंगा।

खरगोश बाहर आया | कौए ने उसे पर झपट्टा मारा भला कौआ और बाज की क्या बराबरी। खरगोश ने कौए को देख लिया ।वह भाग कर छुप गया ।कौआ अपनी झोंक में चट्टान से जा टकराया उसकी सोच और गर्दन टूट गयी। कौआ ने वही दम तोड़ दिया।

सीख-

नकल करना ठीक नहीं है ।
अकल से काम करना चाहिए

खुशिका साहू
कक्षा -2 ब

झूट का फल

भेड़िया जैसे चिल्लाने वाला लड़का। एक चरवाहा लड़का भेड़ - बकरियां की देखभाल से ऊब गया था और गांव वालो को धोखा देने के लिए "भेड़िया" जैसी आवाज निकालता| एक दिन जब असली भेड़िया आया - तो किसी ने उसकी बात पर भरोसा नही किया और वह अपनी भेड़िया से अपनी भेड़े नही बचा पाया। इस कहानी से शिक्षा मिलती है कि , झूठ बोलने से विश्वास खत्म हो जाता हैं। इसलिए हमें झूठ नहीं बोलना चाहिए

मोक्ष सिंग
कक्षा-2(ब)

छात्र के जीवन में अनुशासन के महत्त्व पर कहानी

छात्र के जीवन में अनुसहासन का बहुत महत्त्व होता है। यदि वह अनुशासनहीन हो जाता है तो वह अपना लक्ष्य कभी नहीं पा सकता। अनुशासनहीन होने पर वह अपनी शक्ति को व्यर्थ के कामों में लगाने लगता है और उसका जीवन उसके साथ ही दूसरों के लिए भी भी एक समस्या बन जाता है। ऐसे में अच्छा यही है कि अनुशासन में रह कर अपने जीवन को अपने लिए और दूसरों के लिए उपयोगी बनाया जाए।

ऐसी ही शिक्षा दे रही है यह अनुशासन पर कहानी :-

गुरुकुल में रहते हुए अंजनेय को 4 साल होने वाले थे लेकिन अभी तक वह अनुशासन में रहना नहीं सीखा था। हृष्ट-पुष्ट शरीर था उसका और दिमाग भी बहुत तेज था। परेशानी थी तो बस इसी चीज की कि उसके जीवन में कोई लक्ष्य नहीं था और इस कारण वह अपनी शक्ति गलत कामों और शैतानियों में व्यर्थ कर देता था।

हर रोज नई तरह की शैतानियाँ वो अक्सर ही करता रहता एक बार तो वो एक सोते हुए सहपाठी को उठा कर गुरुकुल के बहार छोड़ आया था और सुबह उसके गम होने से चारों तरफ हाहाकार मच गया था। जब सब को अंजनेय की इस उद्दंडता के बारे में पता चला तो गुरुदेव उस पर बहुत क्रोधित हुए।

पानी सर के ऊपर हो चुका था। गुरु जी द्वारा उसे समझाने के सभी प्रयास विफल हो चुके थे। अंततः एक योजना बनायीं गयी और अंजनेय को एक कार्य सौंपा गया। कार्य था गुरुकुल के पास से बहने वाली नदी का रास्ता रोकना। यूँ तो यह कार्य इतना आसान न था। परन्तु अंजनेय का मानना था कि ऐसा कोई काम नहीं जो वो कर नहीं सकता।

छात्र के जीवन में अनुशासन के महत्त्व पर कहानी

अंजनेय ने अगली सुबह अपना काम शुरू किया। पहले उसने छोटे-छोटे पत्थर रखने शुरू किये। थोड़ी देर बाद उसने देखा कि नदी छोटे पत्थरों को गिरा कर अपना रास्ता बना रही है। इसके बाद उसने बड़े-बड़े पत्थरों से नदी का रास्ता रोका। दोपहर बाद जब उसने नदी का बहाव रोक दिया तो प्रसन्नता पूर्वक गुरुकुल चला गया और सबको बड़े गर्व से बताने लगा। गुरु ने अंजनेय की तरफ देखा तो सही लेकिन कुछ कहा नहीं।

थकावट के कारण अंजनेय जल्दी सो गया। सुबह हुयी तो अंजनेय के कानों में शोर सा सुनाई दिया। आवाजें सुनते ही उसने आँखें खोलीं। लेकिन उसे साफ़-साफ़ कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। फिर उसे कुछ गीलेपन का आभास हुआ। उसने अपने चारों तरफ देखा तो पानी उसके कमरे में फैला हुआ था। वो एक दम से उठा और बहार जाकर देखा तो पूरे गुरुकुल में पानी फैला हुआ था।

"अंजनेय तुमने नदी का बहाव तो रोक दिया लेकिन अब वही पानी हम सबके लिए चिंता का विषय बन गया है। शीघ्र ही इसका कोई निवारण करो, और हाँ स्मरण रहे नदी का बहाव भी रुक जाना चाहिए।" कहते हुए गुरु जी अपने कक्ष में चले गए।

उस दिन अंजनेय बिना कुछ खाए पिए ही गुरुकुल से बाहर चला गया और दिन-रात एक कर उसने पत्थरों का ढेर सारा अंबार लगा नदी का बहाव रोक दिया और दूसरी सुबह वापस आ गया। गुरुकुल में सभी को आदेश था कि कोई भी अंजनेय की किसी भी प्रकार से सहायता नहीं करेगा।

इस बार पानी गुरुकुल में तो नहीं आया लेकिन पास के गाँव में चला गया और इतना पानी चला गया कि अगर जल्द ही उसको रास्ता न दिया जाता तो पूरा गाँव बाढ़ की चपेट में आ सकता था।

अगली सुबह कुछ गाँव वाले आये और गुरु जी से आग्रह करने लगे कि उनके गाँव को डूबने से बचाएं। गुरु जी ने अंजनेय को बुलाया और कहा, “मैंने तुम्हें नदी के बहाव को रोकने के लिए कहा था परन्तु तुम्हारी मूर्खता के कारण उस नदी का जल पहले गुरुकुल में आया और अब पूरे गाँव को डुबाने वाला है।”

“परन्तु गुरु जी मैंने तो आपकी आज्ञा का पालन ही किया!” अपनी पक्ष रखते हुए अंजनेय ने कहा।

“मैंने जल का बहाव रोकने के लिए कहा था। यदि बहाव रुका होता तो गाँव के डूबने की स्थिति क्यों आती? बहाव रोकने का अर्थ है कि जल कहीं नहीं जाना चाहिए।”

– ऐसा कैसे संभव है गुरुदेव? जल की धारा को कैसे रोका जा सकता है? उसकी शक्ति के आगे हमारी शक्ति तो कुछ भी नहीं।”

– क्यों नहीं? पहले तुमने ही उसे रोका वो भी एक बार नहीं दो बार।

अंजनेय को गुरु जी की इस बात से उनकी मंशा का पता चल गया। वो समझ गया कि नदी के बहाव को नहीं रोका जा सकता था फिर भी उसे जानबूझ कर दो बार भेजा गया। परन्तु उसे ये समझ नही आया कि ऐसा किया क्यों गया। अब वो सबके सामने लज्जित था।

छात्र के जीवन में अनुशासन के महत्त्व पर कहानी

तभी गुरुदेव उसके पास आये और कहने लगे,
“हमारा जीवन भी नदी की धारा की तरह है। नदी की तरह हमारे अन्दर भी अपार शक्ति है। यदि हम नदी की तरह अनुशासन में रह कर आगे बढ़ते रहेंगे तो अपने लक्ष्य को जरूर प्राप्त कर लेंगे। परन्तु यदि हम दिशा हीन हो गए। तो हम दूसरों के लिए हानिकारक भी हो सकते हैं। फिर सब हमसे दूर भागेंगे और हमसे मुक्ति का उपाय सोचेंगे। अंतर सिर्फ इतना है कि नदी सोच नहीं सकती और हम सोच सकते हैं। इसलिए निर्णय लेना तुम्हारे हाथ में है तुम अनुशासन में रहना चाहते हो या फिर दिशाहीन होकर अपना जीवन व्यर्थ करना चाहते हो।”
इतना कह कर गुरुदेव तो चले गए लेकिन गुरु की ये बातें सुन अंजनेय को अपने अन्दर एक अजीब सी घुटन महसूस होने लगी। उसे समझ आ गया था कि वह अपने जीवन रुपी नदी की धारा में दिशाहीन होने के साथ-साथ अनुशासन हीन भी हो गया था। अपनी इस भूल को सुधारने के लिए वो सीधा नदी के तट पर गया और उस रूकावट को हटा दिया इसके साथ ही अपने जीवन से भी अनुशासनहीनता रुपी रूकावट को हमेशा के लिए निकाल दिया।

मोक्ष साहू
कक्षा-2(ब)

पिता

पिता परिवार की जिम्मेदारी

परिवार की जिम्मेदारी है पिता ,
दुखों को रोकने वाली चहारदीवारी है पिता।
खुशी और मुस्कान से भरी पिटारी है पिता ,
उम्मीदों के फूलों की क्यारी है पिता।
तूफानों से जो लड़ जाए वो प्रहरी हैं पिता,
मुश्किलों में भी खुश रहने वाला लहरी है पिता।
अपने बच्चों के लिए जागीर है पिता,
संघर्षों के पथ परचलने वाला राहगीर है पिता।
त्याग और प्रेम की मूर्ति है पिता,
जिंदगी की हर जरूरत की पूर्ति है पिता।

श्रेयांश प्रताप
कक्षा -2 ब

शिक्षक

जब पहला पग पड़ा विद्यालय
में तब मैं कोरा पन्ना था।
मुझे भी शिक्षा ग्रहण करके एक अच्छा इंसान बनना था
हां साथ दिया मेरे शिक्षकों ने
और सिखाई हर नई बात मुझे अपनी लिखी कुछ पंक्तियों में
मैं नमन करूंगा आज उन्हें आपके किए उपकारों को
हम जन्मों तक ना भूलेंगे
याद आएगी बहुत आपकी जब कामयाबी का झूला झूलेंगे
दृष्ट संकल्प लेना सिखाते हो हमें।
संस्कारों का महत्व सिखाते हो
भटकते हुए हर रही को सफलता का मार्ग दिखाते हो
नजर सब पर एक समान हो ना कभी शिष्यों में भेदभाव करते हो।
किसी नादान से गलती हो जाए तो सीख देकर माफ करते हो।
हम पर छुपे गुण को तरास कर हम पर हुनर रंग चढ़ाते हो।
हर शिक्षा खुद में एक संस्था है
जी देश को आगे बढ़ाते हैं।

प्रिंस सिन्हा
कक्षा 2 ब

परिवार

परिवार से बड़ा कोई धन नहीं।

पिता से बड़ा कोई सलाहकार नहीं।

मां की छांव से बड़ी कोई दुनिया नहीं।

भाई से अच्छा कोई भागीदार नहीं।

बहन से बड़ा कोई शुभचिंतक नहीं।

पत्नी से बड़ा कोई दोस्त नहीं।

इसलिए परिवार के बिना जीवन नहीं

छाया ध्रुव
कक्षा 2 ब

सवेरा

सूरज निकला मिटा अंधेरा,

देखो बच्चों हुआ सवेरा !

आया मीठा हवा का फेरा,

चिड़ियों ने फिर छोडा बसेरा!

जागो बच्चों अब मत सोओ ,

इतना सुंदर समय न खोओ!

अलायना कुर्रे
कक्षा 2 ब

शिक्षक

जीवन में जो राह दिखाये,
सही तरह चलना सिखाये।
मात-पिता से पहले आता,
जीवन में सदा आदर पाता।
सबको मान प्रतिष्ठा जिससे,
सीखी कर्तव्यनिष्ठा जिससे।
कभी रहा न दूर मैं जिससे,
वह मेरा पथदर्शक हैं जो।
मेरे मन को भाता,
वह मेरा शिक्षक कहलाता।
कभी हैं शांत, कभी हैं धीर,
स्वभाव में सदा गंभीर,
मन में दबी रहे ये इच्छा ,
काश मैं उस जैसा बन पाता,
जो मेरा शिक्षक कहलाता।।

वैदिक चन्द्राकर
कक्षा 2 ब

वीर जवानों को नमन

वीर जवानों को नमन
है नमन उन वीरों को,
जिसने देश का मान बढ़ाया है।
देश में छुपे गद्दारों को,
पल में मार गिराया है।।
बहुत हुए आतंकी हमले,
अब ना होने देना है।
अपने वीर शहीदों का अब,
बदला हमको लेना है ।।
है हिम्मत तो आगे आओ,
छुपकर तुम क्यों लड़ते हो।
बेकसुरों को मार रहे हो,
आगे आने से ड़रते हो।।
कितनी भी चाल चलो तुम,
नहीं कामयाबी पाओगे।
अपने वीर जवानों के आगे,
हरदम मुँह की खाओगे।।
अपनी जान की बाजी
देकर,
जिसनें देश को बचाया है।
खुन की होली खेलकर
जिसनें,
रंग चमन में लाया है।।
गर्व करता है सारा देश,
करते उसे सलाम है।
ऐसे वीर सपूतों को,
माटी का प्रणाम है।।

जय हिंद।
भारत माता की जय।।

दराडे समृद्धी
कक्षा 2 ब

जीत जाऊंगी मैं....

यह हास है या परिहास है,
होता नित नया आभास है।
जीत जाऊंगी मै एक दिन,
दिल मे मेरे विश्वास है।
है घने अंधेरे आज तो क्या,
है बादलों के पहरे लाख हो क्या।
आएगी रोशनी फिर से,
उस अरुणिमा कि मुझे आस है ।।
जीत जाऊंगी मैं दिल में मेरे विश्वास है ।।
है पथ कंटको से भरा तो क्या,
हवाएं थमी हुयी है ,आज तो क्या।
मिलेंगे विजयपुष्प चलेंगे पुरवाई
क्योकि आगे खुला आकाश है ।
जीत जाऊंगी मै एक दिन,
दिल में मेरे विश्वास है ।।

झान्हवी साहू
आठवीं 'ब'

नारी

नारी एक वचन निभाने के लिए जिसने घर-आँगन सब त्याग दिया
एक वचन निभाने के लिए जिसने अपने स्वतंत्रता का परित्याग किया।
सूने-सूने दीवारी को जिसने अपने घर का नाम दिया ,
अंधेरे को जिसने रोशनी का वरदान दिया,
बदले में मानव तूने कैसा पक्षपात किया हैं,
बदले में मानव तूने कैसा आशीर्वाद दिया हैं।
मत भूल मानव नारी शक्ति हैं, नारी दुर्गा हैं, नारी काली है , जो शक्ति का अपमान करता है उसका समूल नाश हो जाता है।
आज की नारी घर की बंद दिवार तक सिमित नहीं.
वह आज चाँद पर पहुंच कर तिरंगा फहराने से लेकर,
दुश्मनो के घर में घुस कर मारने वाली नारी है। ।
मत भूल मानव नारी शक्ति है ,नारी दुर्गा है, नारी काली हैं।

साक्षी चंद्राकर
आठवीं 'ब'

शिक्षक

शिक्षक सिर्फ शिक्षक ही नहीं माता-पिता के समान होते हैं|

ये सिर्फ शिक्षक ही नहीं संपूर्ण समाधान होते हैं

ये सिर्फ शिक्षक ही नहीं साक्षात सरस्वती का रूप होते हैं|

ये सिर्फ शिक्षक ही नहीं हमारा साथ होते है |

ये सिर्फ शिक्षक ही नहीं जीवन का सार होते है |

ये सिर्फ शिक्षक ही नहीं उड़ने के लिए आसमान होते है

ये सिर्फ शिक्षक ही नहीं सफलता की हर पहली सीढ़ी देते हैं

ये सिर्फ शिक्षक ही वहीं जिंदगी को रोशन करते हैं|

ये सिर्फ शिक्षक ही नहीं. माता-पिता के समान होते है ये ....

अंशिका मिश्रा
11वी 'ब'

नई सुबह का सपना

अंधेरों से डरना कैसा, हर रात के बाद सवेरा है।
हर कठिनाई में छिपा हुआ एक अनुभव का बसेरा है।
गिरते - पड़ते सीखते हैं, हर ठोकर एक राह दिखाए ।
सपनो की जो बात करें हम, तो होसला साथ निभाएं,
पंख नहीं तो क्या चिंता है, हवा बना को भी साथी
बना लेंगे,
मन में हो विश्वास अगर तो, हर मंजिल को पा लेंगे ।

नंदिका साहू
आठवीं- ब'

टूटना जरूरी था.

मैने आकाश से पूछा, मेरा टूटना क्यूँ जरूरी था,
मैने आकाश से पूछा , मेरा हारना क्यू जरूरी था।
मैने आकाश से पूछा मेरा दिल टूटना क्यू जरूरी था।
आखिर ये सब होना क्यो जरूरी था ।
फिर आकाश ने कुछ यूँ जवाब दिया
मुझे तेरा टुटना जरूरी था क्योकि तेरा खुद से जुड़ना जरूरी था |
तेरा हारना जरूरी था क्योकि जीत से वास्ता करना ज़रूरी था
तेरा दिल टूटना जरूरी था क्योंकि खुद के दिल को खुद से मिलाना जरूरी था
और आखिर कार ये सब होना इसलिए जरूरी था
क्योकि तेरा खुद से जुड़ना जरूरी था|.

हिया व्यास
11वी -ब

मातृभूमि

भारत हमारी मातृभूमि है।

भारत हमारी मातृभूमि है।

जिसमें कई रंग छुपे है।

हमारा इस आजाद भूमि मे कई वीरो के शव दबे है

नजाने कितने वर्ष गए आजादी की राह पे।

फिर भी आखे भर जाती है, उन जवानो की याद मे

अब सब चीजो में आगे मेरा' प्यारा भारत है।

मेरा धन्यवाद है उन्हे जिनकी वजह से यह भारत है।

दिविजा पारिक
10 वी -ब

रक्षाबंधन

रक्षाबंधन भारत का सबसे प्रसिद्ध त्यौहार है | एक बहन अपने भाई के कलाई मे राखी बांधती है और अपने भाई से एक रक्षा करने का वचन मांगती है, जिसमे हर भाई पूरे समय अपने बहन की रक्षा करेगा और वह अपनी बहन को किसी भी तरह के आने वाले समस्या से बचाने का संकल्प लेते हैं | कुछ बहनो के भाई नहीं होते तो भगवान को ही अपने भाई के रूप मे पूजा करते है।यह त्यौहार पूरे भारत मे प्रसिद्ध हैं। इस त्योहार में सभी अपने भाई बहन से मिलते है और अलग - अलग प्रकार के पकवान तथा मिठाईया बनती है इस त्योहार से भाई बहन का प्यार बहुत बढ़ता है।

सृष्टि साहु
11वी-ब

मंदिर

मंदिर एक बहुत शान्त स्थान है, जहा लोग मन्नते मागने जाते हैं। मंदिर ऐसी स्थान है जहां ईश्वर का निवास माना जाता है। अगर हम कष्ट या संकट में हैं तो वहां जाकर हमे शांति मिलती है। यह एक ऐसी जगह है जहां लोग दुर- दुर से आते है जहां कोई भेद-भाव नही होता। यहां सब अपनी इच्छा से आते है। लोग अपना दुःख दर्द अपने भगवान को बताकर पूजा करते है। यह जन्नत के बराबर है यहा पूजा और भजन कीर्तन होता है जिससे लोग अपना दुःख भूलकर भजन में मगन हो जाते हैं। यहाँ छोटे, बड़े, सब आते है। मंदिर हिन्दुओं के लिऐ बहुत पवित्र स्थान है।

पावनी देशपांडे
11 -ब

शिवम

शिवम नाम अर्थ हैं कल्याण| यह नाम भगवान शिव के नाम का पर्यायवाची है| मेरा नाम शिव है और बचपन से ही मुझे यह बताया गया हैं कि शिवम नाम का अर्थ “कल्याण” होता है |माता -पिता मेरा नाम शिवम यही सोचकर रखा है ताकि मै देश विश्व के कल्याण में कुछ छोटी सी मदद करने योग्य बनू| देश और विश्व का कल्याण बहुत तरह से किया जा सकता है जैसे कि एक विद्यार्थी पढ़कर जीवन मे सफल होकर अपने देश के लिए कुछ अच्छा काम कर सकता है| एक व्यक्ति विज्ञान के क्षेत्र मे तरक्की कर अपने देश को आगे बढ़ा सकता है| अगर एक विद्यार्थी खेल के क्षेत्र मे अच्छा हो और देश का नाम रोशन करे तो यह भी कल्याण का एक उदाहरण बन जाता है| शिवम नाम बहुत पवित्र है क्योंकि यह नाम स्वयं भगवान शिव का हैं |

शिवम तिवारी
11वी -अ

योग और अध्यात्म

योग केवल हमारे शरीर की ही नहीं बल्कि हमारे अंतःकरण की शुद्धि भी करता है। योग शब्द संस्कृत के" युज" शब्द से उत्पन्न हुआ जिसका अर्थ जोड़ना होता है। इस तरह मनुष्य की आत्मा को परमात्मा से जोड़ने की बात की जा रही है। मनुष्य की आत्मा जो किं संसार के माया ग्रसित विषयो मे फंसा हुआ है। योग आत्मा को पवित्र करता है जब आत्मा पवित्र होती है, अंतःकरण शुद्ध होता है तब हृदय मे सतोगुण की भावना प्रकट होती है ।योग चार प्रकार के होते है कर्मयोग जिसमे मनुष्य अपने कर्तव्य का ईमानदारी से पालन कर ईश्वर की प्राप्ति करता है |दूसरा ज्ञानयोग इसमे व्यक्ति ज्ञान अर्जित कर ईश्वर की एकमात्र व्यापकता को जानकर मोक्ष को प्राप्त करता है। भक्तियोग इस योग मे मनुष्य भगवान के साथ रिश्ता बनाकर उनकी प्रेम भक्ति में मग्न हो जाते है। राजयोग - इसमे   व्यक्ति अच्छे पुण्यकर्म जैसे दान आदि कर बार भगवान को प्राप्त करता है।

शब्द भरत चन्द्राकर
11वी ब

लालच

एक गाँव में राजू नाम का एक आदमी था ।वह बहुत मेहनती और ईमानदार था , मेहनती होने के बावजूद वह गरीब था।एक दिन वह किसी काम से बाहर जाता है तो उसे रास्ते में एक बर्तन मिलता है तो वह उसे घर ले जाता है क्योंकि उसके पास खाना बनाने के बर्तन नहीं था और वह गरीब भी था इसलिए वह बर्तन नहीं खरीद सकता था। वह घर जाते ही बर्तन अपनी पत्नी को दे देता है और कहता है जल्दी से मेरे लिए भोजन बना दो| उसकी पत्नि उस बर्तन मे दाल और चावल डालती है तो वह पाँच गुना बड़ जाता है। यह देख कर राजू और उसकी पत्नी बहुत खुश हो जाते है क्योकि इसकी वजह से उन्हें महीनो तक अनाज नहीं खरीदना पडेगा। उसी समय उनका लालची पड़ोसी यह सब देख लेता है तो वह उस बर्तन को चुरा लेता है और घर ले जाकर लालच में आकर पाँच किलो अनाज डाल देता है और उसके कुछ ही समय बाद में पाँच गुणा बड़ जाता है और उसका सारा अनाज बर्बाद हो जाता है।

"इसलिए कहते हैं लालच बुरी बला है "

कनिष्का जौहरी
8 वीं -अ

जो भी काम मिले उसे पसंद करना चाहिए

मेरा शिक्षक कहते है हमे रोज खूब मेहनत करना चाहिए। अक्सर जब हमारे पास कोई काम होता है तो हम सोचते हैं कि उसे कल या बाद में पूरा कर देंगे। ऐसा करने से हमारे पास काम का बोझ अधिक होने लगता है और फिर उस काम को करने का मन नहीं होता तथा तनाव बढ़ने लगता है। जो भी पढ़ाया या सिखाया जाता है उसे लगन से पूरा करना चाहिए। रोज जल्दी उठकर व्यायाम करना भी पसंद करना चाहिए। खेलकूद में भाग लेना भी जरूरी होता हैं। अपनो से बड़ों की आज्ञा का पालन करें। अपना काम स्वयं करना चाहिए। किसी भी काम को छोटा- बड़ा नहीं समझना चाहिए। इसीलिए तो कहते हैं जो भी काम मिले उसे पसंद करना चाहिए।

पार्थ चंद्राकर
चौथी -अ

व्यायाम - कसरत के लाभ

व्यायाम करना हमारे शरीर के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। कसरत के कई लाभ-हानि है। जैसे की शारीरिक बल का विकास, शरीर के हॉरमोन्स को बढ़ावा देने मे, शरीर में फुर्ति आदि देने में मदद करता है|व्यायाम हमारे हृदय के लिए लाभदायक होता है। व्यायाम करने से हमारे जीवन मे अनुशासन को बढ़ावा मिलता है। कई लोग केवल बाहर का नाश्ता करते हैं और फल और लाभदायक अन्न का सेवन नहीं करते परन्तु उन्हें नहीं पता कि यह सब सेवन न करने से शरीर में बीमारियोंको आमंत्रण दे रहे है। उन्हें यह भी नहीं पता कि फल न खाने, व्यायाम न करने व बाहर का तला हुआ खाने से उनका बुढापा बहुत कष्ठ से भरा हुआ होगा ।वही व्यायाम करने वाला और फल खाने वाले व्यक्ति को बुढापे में ज्यादा कष्टों का सामना नहीं करना पड़ता। हमारे देश के 80% लोग नुट्रिशन डिफिशियंत है इसलिए हम सभी लोगो को व्यायाम करने व लाभदायक अन्न खाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। कई लोग व्यायाम यह सोचकर नही करते कि यह केवल लड़कों के लिए परन्तु व्यायाम की आवश्यकता लडको से ज्यादा लडकियो को है। अतः व्यायाम सभी को करना चाहिए इसलिए कहा गया है ।

"करे योग, रहे निरोग "

उज्जवल भतपहरी
11वी -ब

एक पेड़ माँ के नाम

एक पेड़ माँ के नाम लगाए,
धरती माँ को खुशहाल बनाए।
एक - एक कर पेड़ हजार होंगे,
गाँव - शहर गुलजार होंगे।
हरा - भरा होगा जग सारा,
सुधरेगा पर्यावरण हमारा।
सुबह - शाम ये शुद्ध हवा देंगे,
हम सबको ये स्वस्थ रखेंगे।
बारिश होगी, ठंडक बढ़ेगी,
गर्मी से निजात मिलेगी।
नए कोपल, नए फूल खिलेंगे,
हवा बहेगी, सब महकेंगे।
तरो - ताज़ा होगा जीवन अपना,
स्वस्थ रहने का पूरा होगा सपना।
जीवन को ना व्यर्थ गवाएँ,
एक पेड़ माँ के नाम लगाएँ।
धरती माँ को खुशहाल बनाएँ,
धरती माँ को खुशहाल बनाएँ।

श्री नीलमाधव सिंह
प्राथमिक शिक्षक

बाल कविता

स्वर ज्ञान

1 .अ अनार के दाने लाल,
खाए जमकर पोपट लाल।
2.आ से आम एक लेकर राधा,
बांटे सबको आधा आधा।
3 इ से होता इमली खट्टी ,
स्वाद मजेदार ।
4. ई से मीठा मीठा ईख ,
गन्ना रसदार ।।
5.उ से उल्लू रात को जागे,
लक्ष्मी की सवारी।
6.ऊ ऊन से बनता स्वेटर ,
भागे ठंडी सारी।।

7.ऋ ऋषि को देखो मित्रो ,
करता प्रभू का ध्यान।
8.बाल गीत से आओ सीखें,
स्वर का अक्षर ज्ञान।।
9 . ए से एड़ी चोटी लगाकर,
,मंजिल तक हम जाए।
10.ऐ से ऐनक रंग बिरंगी ,
आंखो को बचाए।।
11 ओ से सुंदर ओखली ,
जिसमे रहता मूसल एक।
12 औ से औरत घर की शोभा,
जिसके होते रूप अनेक।।

श्री जितेंद्र कुमार चंद्राकर
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
गणित

कोशिश

प्रेरक कविता
कोशिश कर हल निकलेगा
आज नहीं तो कल निकलेगा
अर्जुन के तीर सा निशाना साध
जमीन से भी जल निकलेगा
मेहनत कर पौधो को पानी दे
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा
ताकत जुटा हिम्मत बढ़ा
फौलाद सा भी बल निकलेगा
जिन्दा रख दिल में उम्मीदो को
रेगिस्तान मे भी जल निकलेगा
कोशिश जारी रख कुछ कर गुजरने की
जो है आज थमा-थमा सा वो चल निकलेगा

श्री दशरथ राम यादव
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
(हिन्दी)

English Department

अंग्रेजी विभाग

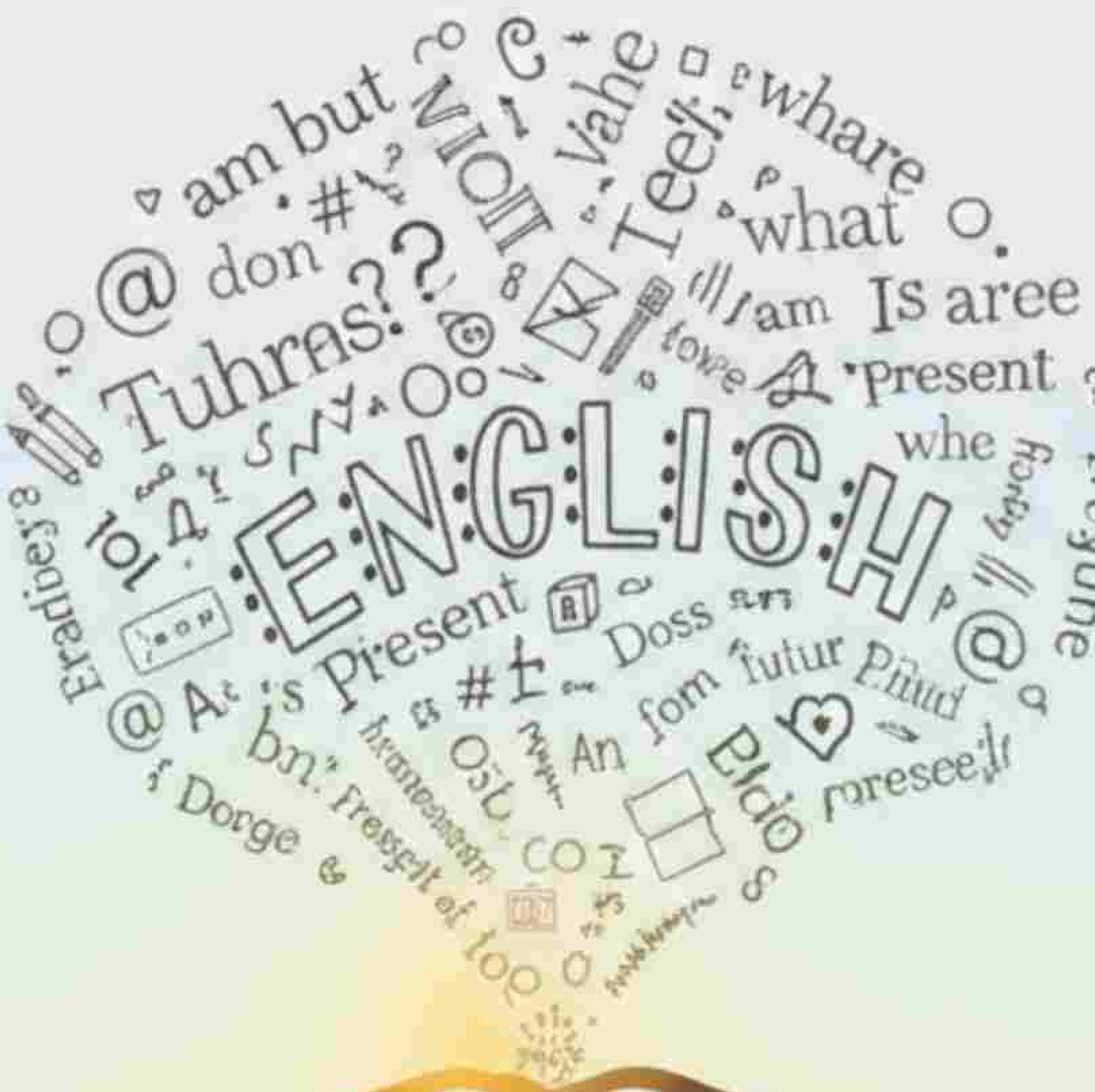

Nala The Snail

When things go wrong, don’t say “I can’t,”
Just try again — be brave, don’t rant!
A tiny seed breaks stones to grow,
The harder the path, the brighter you’ll glow.
The bird who falls but flies again,
Learns to dance in sun and rain.
Dream big, work hard, and never stop,
Step by step, you’ll reach the top!
Mistakes will come — that’s how you learn,
For every try, success you’ll earn.
Believe in yourself, hold your chin up,
You’re strong — so never give up!

VIBHUTI CHANDRAKAR
CLASS - 4 A

Never Give Up!

When things go wrong, don’t say “I can’t,”
Just try again — be brave, don’t rant!
A tiny seed breaks stones to grow,
The harder the path, the brighter you’ll glow.
The bird who falls but flies again,
Learns to dance in sun and rain.
Dream big, work hard, and never stop,
Step by step, you’ll reach the top!
Mistakes will come — that’s how you learn,
For every try, success you’ll earn.
Believe in yourself, hold your chin up,
You’re strong — so never give up!

ADITI
MANIKPURI
CLASS-12'A'

Indian Soldier

A Salute To The Indian Soldier
Salute to the Indian Soldier,
who can't break their order,
for the country, whole day & night,
they're never lose their sight,
Salute to the Indian Soldier,
who can't break their order,
for us they're on border, because
they follows only order,
Salute to the Indian Soldier,
who can't break their order,
why their festivals are bullets &
bombs?
why not they got happiness' tombs?
Salute to the Indian Soldier,
who can't break their order,
why their favorite color is blood?
why their duties are gone to mud?
Salute to the Indian Soldier.........
lose their sight.

Salute to the Indian Soldier,
who can't break their order,
because of them we're alive,
as honey is safe behind the hive,
Salute to the Indian Soldier,
who can't break their order,
why they don't have respect?
as politicians want, as they expect,
Salute to the Indian Soldier,
who can't break their order,
wake up all & give respect,
as we want, as we expect,
Salute to the Indian Soldier,
who can't break their order,
I'll give salute again & again,
because, for soldiers I've no
complain,
Salute to the Indian Soldier........
lose their sight.

JANHAVI
NISHAD
10TH B

POEM ON MATHEMATICS

Numbers dance and figures play,
Maths makes sense in every way.
Add and subtract, multiply too,
Fractions, shapes — all come through!

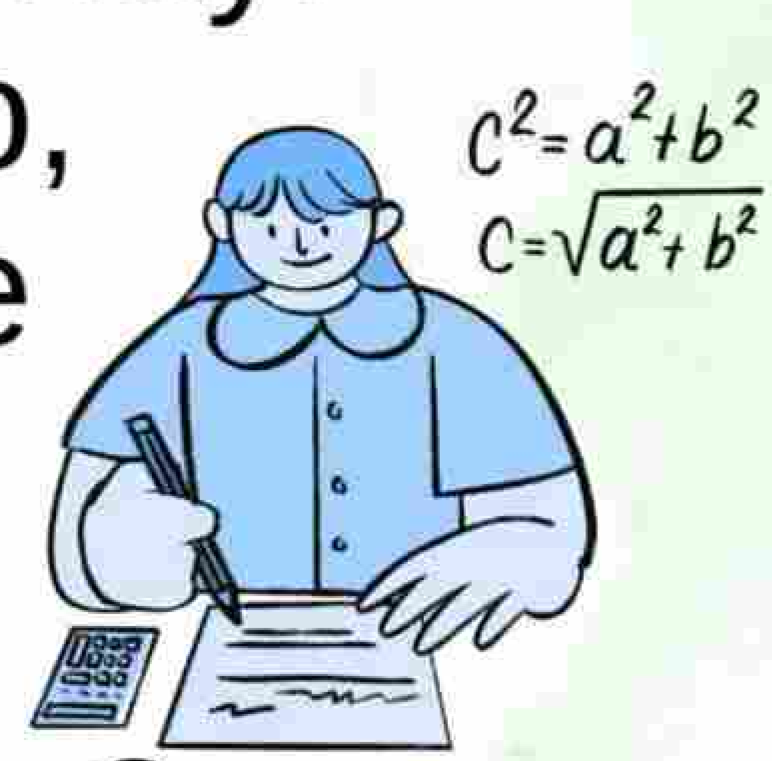

Angles open, circles spin,
Equations race — who will win?
From tiny sums to giant sums,
Maths is where all logic comes!
It builds our mind, it makes us smart,
Maths is truly a work of art.
So count, compute, and never fear,
The magic of Maths is always near!

KAMYA CHANDRAKAR
CLASS 6TH A*

संस्कृत विभाग

Sanskrit Department

🌼 श्लोक

श्लोक 1

पृथ्वीः धारयति सर्वं, जलं जीवनमिष्यते।
वायुः प्राणो हि भूतानां, प्रकृतिर्मातृरूपिणी॥

हिंदी अर्थ:

पृथ्वी सबको धारण करती है, जल जीवन कहलाता है, वायु सभी प्राणियों का प्राण है — प्रकृति हमारी माता के समान है।

🌿 श्लोक 2

संस्कृत:

वनानि रक्षन्ति प्राणिनः, प्राणिनो रक्षन्ति वनानि च।
परस्परं बन्धनं एषां, तस्माद् रक्षेत् प्रकृतिम्॥

हिंदी अर्थ:

वन (जंगल) जीवों की रक्षा करते हैं और जीव वन की रक्षा करते हैं।
यह दोनों का परस्पर बंधन है, इसलिए हमें प्रकृति की रक्षा करनी चाहिए।

🌺 श्लोक 3

संस्कृत:
न हि तृप्तिं लभते मानवः लोभेन।
सन्तोष एव परमं धनम् इति स्मृतम्॥

हिंदी अर्थ:
मनुष्य लोभ से कभी संतुष्ट नहीं होता,
संतोष ही सबसे बड़ा धन माना गया है — प्रकृति हमें यही सिखाती है।

🌾 श्लोक 4

संस्कृत:
आपः शुद्धयन्ति सर्वत्र, पृथिव्यां चाकाशे च।
प्रकृतिर्मलिनं शुद्धयति, यदि मानवो न मलिनः॥

हिंदी अर्थ:
जल हर जगह शुद्ध करता है — धरती और आकाश में भी,
प्रकृति भी शुद्ध रहती है, यदि मनुष्य उसे मलिन न करे।

सुभाषितरसम्

प्रियावाक्य प्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात् तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ।।

अर्थात
मधुर भाषा से सभी प्राणी हमारे सभी मित्र, माता -पिता आदि सभी प्रसन्न होते हैं। मधुरभाषा अर्थात मधुर वाणी से कोई हानि नहीं होता है। अतः सदैव मधुर भाषा ही बोलना चाहिए। मधुर बोलने के लिए कभी भी संकोच नहीं करना चाहिए।

अष्टावशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥

अर्थात
महर्षि वेदव्यास के अठारह पुराणो दो वचन सार है
① दूसरों की उपकार करने से पुष्य होता है। पुण्य मिलता है।
② और दूसरों को पीड़ा देने से पाप होता है। अतः हम सभी को सर्वदा परोपकार करना चाहिए। कभी भी दूसरो को पीड़ा नहीं देना चाहिए।

षड़ दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता ।
निद्रा, तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता ।।

अर्थात
हममें नीन्द आदि छ दोष होते हैं- नीन्द, थकान ,भय ,क्रोध, आलस्य और देरी से काम करना इन छः दोषों को त्याग देना चाहिए यह दोष व्यक्ति के विकास में अवरोधक है ।

एकता यादव
कक्षा-8वी "अ"

Photograph

MORNING ASSEMBLY

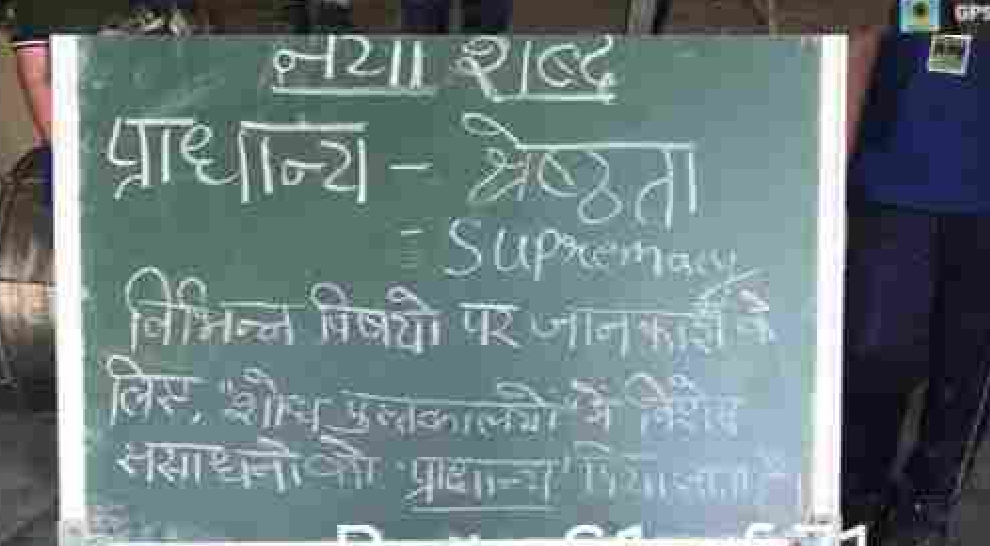

जनजातीय
प्रश्नोत्तरी
पक्ष
विपक्ष
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय महासमुन्द
रायपुर संभाग (छ.ग.)
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA MAHASAMUND
RAIPUR REGION (C.G.)
भाषा संगम
ROMAN HOUSE
CCA ACTIVITY
पीएम श्री
केन्द्रीय विद्यालय, महासमुन्द
हिंदी पखवाड़ा
दिनांक: 01.09.2025 से 15.09.2025

MINI SPORT MEET

TRANNING AND MEETTING

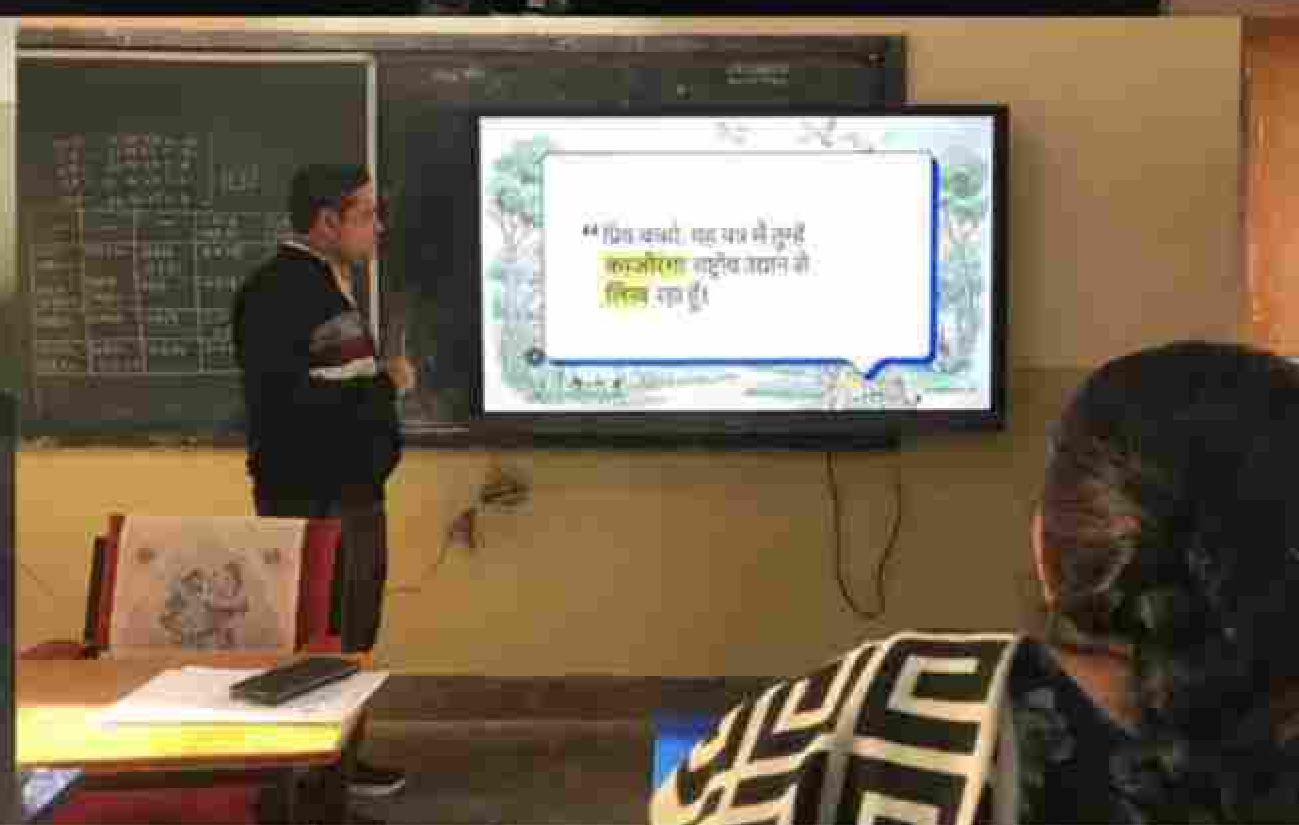

ART GALLERY

PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA MAHASAMUND
RASHTRIYA
VISHKAR
SAPTAH-20

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय महासमुन्द में आपका हार्दिक स्वागत है
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA MAHASAMUND WELCOMES YOU

PM SHRI
Idea Box

Celebrating

SAFAL EXAMINATION

पोषण माह

पोषण माह

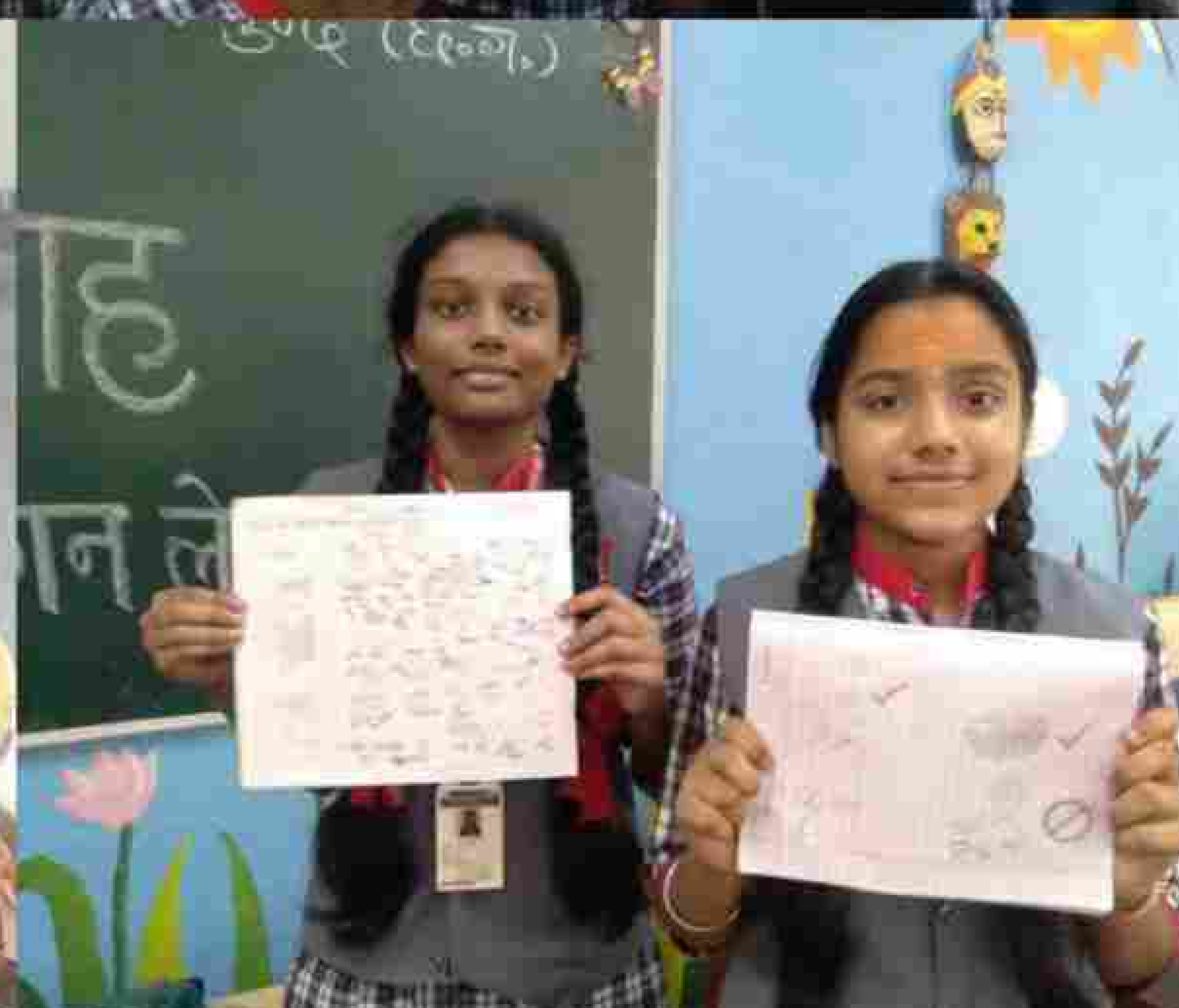

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय महासमुन्द
रायपुर संभाग (छ.ग.)
KENDRIYA VIDYALAYA MAHASAMUND
RAIPUR REGION (C.G.)

पोषण माह

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, रायपुर संभाग

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, रायपुर संभाग
संकुल स्तरीय राष्ट्रीय एकता पर्व 2025
स्थल:-पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय महासमुन्द (छ.ग.)

पी एम श्री केन्द्रीय विद्यालय

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, रायपुर संभाग

ANNUAL DAY CELEBRATION

Thank
You